ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 318-320**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

छात्राध्यापकों में निराशा का अध्ययन आदत पर प्रभावः एक तुलनात्मक अध्ययन

सालिक हुसैन, 2. डॉ0 राज कुमार झा

शोध अध्येता– शिक्षा संकाय, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, 2. असिस्टेंट प्रोफेसर, ललित नारायण मिश्र कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट (TEP), मुजफ्फरपुर (बिहार) भारत

Received-15.03.2025, Revised-22.03.2025 Accepted-29.03.2025 **E-mail: aaryvart2013@gmail.com**

***सारांशः** प्रस्तुत शोध–लेख का उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राध्यापकों के निराशा स्तर तथा उनकी अध्ययन आदतों के मध्य संबंध का विश्लेषण करना है। वर्तमान समय में रोजगार की अनिश्चितता, प्रतिस्पर्धा की तीव्रता तथा भविष्य के प्रति असुरक्षा की भावना के कारण छात्राध्यापकों में निराशा की समस्या निरंतर बढ़ती जा रही है। इस शोध में कटिहार जिले के विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. सत्र 2023दृ25 एवं 2024दृ26 के छात्राध्यापकों को अध्ययन का आधार बनाया गया। अध्ययन में निराशा को स्वतंत्र चर तथा अध्ययन आदत को आश्रित चर के रूप में लिया गया। शोध में प्रमाणीकृत निराशा परीक्षण एवं अध्ययन आदत परीक्षण का प्रयोग किया गया। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात का उपयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि उच्च एवं निम्न निराशा स्तर वाले छात्राध्यापकों की अध्ययन आदतों में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया। साथ ही लिंग एवं जातिगत आधार पर भी अध्ययन आदतों में अधिकांशतः कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं मिला। शोध यह संकेत करता है कि निराशा का प्रभाव अध्ययन आदतों पर प्रत्यक्ष रूप से उतना प्रभावी नहीं है, जितना सामान्यतः माना जाता है।*

कुंजीभूत शब्द– व्यावसायिक आकांक्षाएँ, आत्म–विश्वास, उपलब्धि अभिप्रेरणा, माध्यमिक विद्यालय, छात्र, सामाजिक – आर्थिक प्रगति।

1. प्रस्तावना– शिक्षा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति का आधार मानी जाती है। शिक्षक शिक्षा, शिक्षा व्यवस्था का ऐसा महत्वपूर्ण अंग है जो भविष्य के शिक्षकों का निर्माण करती है। यदि शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्राध्यापक मानसिक रूप से संतुलित, प्रेरित एवं सकारात्मक होंगे, तभी वे प्रभावी शिक्षक बन सकेंगे। वर्तमान समय में छात्राध्यापकों के समक्ष रोजगार की सीमित संभावनाएँ, प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव, आर्थिक कठिनाइयाँ तथा सामाजिक अपेक्षाएँ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर रही हैं, जिनसे उनमें निराशा की भावना विकसित हो रही है।

निराशा व्यक्ति की मानसिक स्थिति को प्रभावित करती है। जब व्यक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ति में बाधाओं का अनुभव करता है, तब उसके भीतर हताशा, असंतोष एवं आत्मविश्वास की कमी उत्पन्न होने लगती है। छात्राध्यापकों में यह स्थिति उनकी अध्ययन आदतों को भी प्रभावित कर सकती है। अध्ययन आदत से आशय अध्ययन के प्रति व्यक्ति की नियमितता, एकाग्रता, समय–प्रबंधन, पुनरावृत्ति एवं अध्ययन पद्धति से है। यदि छात्राध्यापक निराशा से ग्रस्त होते हैं, तो उनकी अध्ययन प्रक्रिया में असंगति एवं उदासीनता आ सकती है।

इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया कि छात्राध्यापकों में निराशा का उनकी अध्ययन आदतों पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है।

2. अध्ययन की समस्या– "छात्राध्यापकों में निराशा का अध्ययन आदत पर प्रभाव : एक तुलनात्मक अध्ययन"

3. अध्ययन के उद्देश्य–

1. उच्च एवं निम्न निराशा स्तर वाले छात्राध्यापकों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
2. निराशाग्रस्त छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. निराशाग्रस्त सामान्य, पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों की अध्ययन आदतों पर निराशा के प्रभाव का विश्लेषण करना।

4. परिकल्पनाएँ–

1. उच्च एवं निम्न निराशा स्तर वाले छात्राध्यापकों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. निराशाग्रस्त छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. निराशाग्रस्त सामान्य जाति एवं पिछड़ी जाति के छात्राध्यापकों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. निराशाग्रस्त सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. निराशाग्रस्त पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. **शोध विधि–** प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोधकर्ता द्वारा कटिहार जिले के चार शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों से 400 छात्राध्यापकों का चयन किया गया।

सारणी 1 : चयनित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के अनुसार छात्राध्यापकों का विवरण

क्रम सं.	शिक्षक प्रशिक्षण संस्था का नाम	छात्रों की संख्या	छात्राओं की संख्या	कुल
1	कटिहार शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय	40	60	100
2	ख्वाजा शाहिद हुसैन शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय	55	45	100
3	सीमाँचल अल्पसंख्यक बी.एड. महाविद्यालय	54	46	100
4	डी.एस. कॉलेज, कटिहार	51	49	100
कुल		220	180	400

6. शोध उपकरण–

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

1. डॉ. बी. एम. दीक्षित एवं डॉ. डी. एन. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित निराशा परीक्षण।
2. डॉ. वी. बी. पटेल द्वारा निर्मित अध्ययन आदत परीक्षण।

7. प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

सारणी 2 : उच्च एवं निम्न निराशा वाले छात्राध्यापकों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक विश्लेषण

निराशा स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	C.R. मान	D.F.	निष्कर्ष
उच्च निराशा	73	163.22	19.56	0.81	398	सार्थक नहीं
निम्न निराशा	327	165.72	20.08			

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि उच्च निराशा वाले छात्राध्यापकों की अध्ययन आदत का मध्यमान 163.22 तथा निम्न निराशा वाले छात्राध्यापकों का मध्यमान 165.72 प्राप्त हुआ। ब्त्य मान 0.81 पाया गया, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान से कम है। अतः दोनों समूहों की अध्ययन आदतों में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सारणी 3 : निराशाग्रस्त छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक विश्लेषण

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	C.R. मान	D.F.	निष्कर्ष
छात्र	41	162.32	18.65	0.91	71	सार्थक नहीं
छात्रा	32	166.62	21.80			

सारणी के अनुसार निराशाग्रस्त छात्राओं की अध्ययन आदतों का मध्यमान छात्रों की तुलना में अधिक पाया गया, किन्तु ब्त्य मान 0.91 होने के कारण यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि निराशा की स्थिति में लिंग का अध्ययन आदतों पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता।

सारणी 4 : निराशाग्रस्त सामान्य जाति एवं पिछड़ी जाति के छात्राध्यापकों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक विश्लेषण

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	C.R. मान	D.F.	निष्कर्ष
सामान्य जाति	25	169.67	20.32		64	सार्थक नहीं
पिछड़ी जाति	41	166.21	20.19			

प्राप्त परिणामों से ज्ञात होता है कि सामान्य एवं पिछड़ी जाति के छात्राध्यापकों की अध्ययन आदतों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इससे यह संकेत मिलता है कि निराशा की स्थिति में जातिगत भिन्नता अध्ययन आदतों को विशेष रूप से प्रभावित नहीं करती।

8. प्रमुख निष्कर्ष–

1. उच्च एवं निम्न निराशा स्तर वाले छात्राध्यापकों की अध्ययन आदतों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।
2. निराशाग्रस्त छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं मिला।
3. जातिगत आधार पर भी अध्ययन आदतों में विशेष अंतर नहीं पाया गया।
4. अध्ययन आदतें अनेक सामाजिक एवं व्यक्तिगत कारकों से प्रभावित होती हैंय केवल निराशा को इसका प्रमुख कारण नहीं माना जा सकता।

9. शैक्षिक निहितार्थ–

1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में परामर्श एवं निर्देशन सेवाओं को सुदृढ़ किया जाना चाहिए।
2. छात्राध्यापकों में सकारात्मक सोच एवं आत्मविश्वास विकसित करने हेतु प्रेरणात्मक कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
3. अध्ययन आदतों के विकास हेतु समय–प्रबंधन एवं अध्ययन कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए।
4. मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों को शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

10. निष्कर्ष– प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्राध्यापकों में निराशा की समस्या अवश्य विद्यमान है, किन्तु इसका अध्ययन आदतों पर प्रत्यक्ष एवं निर्णायक प्रभाव स्पष्ट रूप से प्रमाणित नहीं हुआ। अध्ययन आदतें बहुआयामी कारकों से प्रभावित होती हैं। अतः शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को विद्यार्थियों के मानसिक, सामाजिक एवं शैक्षिक विकास के लिए समग्र वातावरण प्रदान करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अल–हेमैसम, एम. आई. (1986). विज्ञान उपलब्धि, विज्ञान अधिगम के प्रति अभिवृत्ति, प्रेरणा तथा सऊदी अरब के माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष छात्रों की अपसारी सृजनात्मकता, जिन्हें शैक्षणिक रूप से प्रतिभाशाली अथवा गैर–प्रतिभाशाली के रूप में पहचाना गया। डिसर्टेशन एब्स्ट्रैक्ट्स इंटरनेशनल (ए), 46(10), पृष्ट संख्या 29–85।
2. चौडविक, बी. ए., भार, एच. एम., एवं स्ट्रॉस, जे. (1977). नगरों में भारतीय शिक्षा और शैक्षणिक निष्पादन के सहसंबंध। जर्नल ऑफ एजुकेशन रिसर्च, 70(3), पृष्ट संख्या 135–141।
3. गुप्ता, जे. पी. (1978). शैक्षणिक उपलब्धि, लिंग एवं आर्थिक स्तर के संदर्भ में चिंता तथा उपलब्धि–प्रेरणा का अध्ययन। अप्रकाशित पी–एच.डी. (शिक्षा) शोध–प्रबंध, लखनऊ विश्वविद्यालय। थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, पृष्ट संख्या. 358।

4. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (1986). राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986। नई दिल्ली, भारतः मानव संसाधन विकास मंत्रालय। Retrieved from http://www.ncert.nic.in/oth_anoun/npe86.pdf
5. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020। नई दिल्ली, भारतः मानव संसाधन विकास मंत्रालय। https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
6. कृष्णमूर्ति, एस., एवं साउंडराजा राव, टी. आर. (1969). कोयंबटूर के कुछ उच्च विद्यालयों में उप–शहरी एवं शहरी बच्चों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन। जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एक्सटेंशन, 6(1), पृष्ट संख्या 32–39।
7. जस्टिस वर्मा आयोग। (2012). भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित शिक्षक शिक्षा पर उच्चाधिकार प्राप्त आयोग की रिपोर्ट। एम.एच.आर.डी., विद्यालय शिक्षा एवं साक्षरता विभाग। Retrieved from https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/documentreports/JVC%20Vol%201.pdf
8. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2006). स्थिति पत्रः विज्ञान शिक्षण पर राष्ट्रीय फोकस समूह। नई दिल्ली, भारतः एन.सी.ई.आर.टी. Retrieved from https://www.ncert.nic.in/new_ncert/ncert/rightside/links/pdf/focus_group/science-pdf
9. वर्मा, एम. (1985). शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकः उत्तर प्रदेश के जूनियर हाई स्कूल स्तर पर जनजातीय एवं गैर–जनजातीय छात्रों का पार–सांस्कृतिक अध्ययन। पी–एच.डी. (शिक्षा), अवध विश्वविद्यालय। फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, पृष्ट संख्या 866।
10. गिलफोर्ड, जे. पी. (1982). फंडामेंटल स्टैटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एंड एजुकेशन। नई दिल्लीः मैकग्रा–हिल पब्लिशिंग कंपनी लिमिटेड।
11. अग्रवाल, जे. सी. (2007–08). शैक्षिक तकनीकी (पंचम संस्करण)। आगरा–2ः अग्रवाल पब्लिकेशन।
12. दुबे, सुनील (2007). जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामाजिक अध्ययन में विद्यार्थियों की उपलब्धि एवं अभिवृत्ति पर वैयक्तिक अनुदेशन का प्रभाव। अप्रकाशित पी–एच.डी. (शिक्षा) शोध–प्रबंध, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
13. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद। (2009). शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखाः व्यावसायिक एवं मानवीय शिक्षक की तैयारी की दिशा में। नई दिल्ली, भारतः एन.सी.टी.ई. Retrieved from https://ncte.gov.in /Website/PDF/NCFTE_2009.pdf
14. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005। नई दिल्ली, भारतः एन.सी.ई.आर.टी. Retrieved from https://www.ncert.nic.in/rightside/links/pdf/framework/english/nf2005.pdf
15. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2006). स्थिति पत्रः विज्ञान शिक्षण पर राष्ट्रीय फोकस समूह। नई दिल्ली, भारतः एन.सी.ई.आर.टी. Retrieved from https://www.ncert.nic.in/new_ncert/ncert/rightside/links/pdf/focus_group/science.pdf

*****